IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
बिहार शोध समागम BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस में वर्णित भरतजी को दिये गये भक्ति उपदेशों का अध्ययन करना

आरती दास
शोद्यार्थी
डॉ. अल्पना शर्मा (सहायक आचार्य)
शोद्य निद्रेशक
शिक्षा संकाय, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय) गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चुरु (राज.)

सारांशः—
गोस्वामी तुलसीदासजी हिंदी के 'भक्तिकाल' की सगुन काव्यधारा में राम 'भक्तिषाखा' के सर्वोपरी कवि थे। गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपना सम्पूर्ण जीवन प्रभु श्रीरामजी की भक्ति और उनके गुणों गान करने के लिए समर्पित कर दिए थे। तुलसीदासजी ने अपनी रचनाओं में स्त्री जाति को इच्छाषक्ति, साहस एवं धर्मपरायण के रूप में चित्रित किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी के गुणों और महत्व को उत्कृष्टता के साथ प्रस्तुत किया है। तुलसीदासजी ने प्राचीन सांस्कृतिक आदर्षों पर आधारित नारी के स्वरूप को स्वीकार किया। उन्होंने नारी को पतिव्रत धर्म से परिपूरित हृदय, त्याग, सेवा, ममता, कर्तव्यपरायण षील, भक्ति तथा मर्यादा से परिपूर्ण मानवीय चरित्र के रूप में वर्णन किया है।

प्रस्तावनाः—

"बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।।"196/4[1]

मुनि श्रीवषिष्ठजी जब चारों भाइयों नामकरण कर रहे थे तब उन्होंने कहा जो संसार के भरण—पोषण करते हैं, उनका नाम भरत होगा। आदर्ष भ्रातृप्रेम, त्याग और धर्म की प्रतिमूर्ति है। जब उन्हें श्रीरामजी के वनवास और कैकेयी के वरदान के वारे में पता चला, तब उन्होंने माता कैकेयी की निंदा की और राज्य को अस्विकार कर दिया। भरतजी श्रीरामजी को वापस लाने के लिये चित्रकूट गये, लेकिन अपने कर्तव्य पथ पर अटल श्रीरामजी वापस नहीं आये, तब भरतजी उनकी चरण पादुकाएं लेकर अयोध्या वापस आएं। अयोध्या के राजपाट मिलने के बावजूद, उन्होंने अपने बड़े भाई एवं परमात्मा स्वरूप श्रीरामजी के प्रति अटूट प्रेम और सम्मान के कारण उन्होंने स्वयं को राजा नहीं माना, बल्कि श्रीरामजी के चरण पादुकाओं को सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर अपने को उनकी प्रतिनिधि के रूप में 14 वर्ष तक नंदीग्राम में रहकर कंद,मूल, फल खाएं, जटाओं का मुकुट धारण किए हुए तपस्वी जीवन जिये और राजकार्य सम्हालते रहें। भरतजी का चरित्र स्वार्थ और लालच से कोसों दूर है। भरतजी अपने भाई एवं ईष्ट श्रीरामजी के प्रति निष्ठा और धर्म का सर्वोच्च उदाहरण है। भरतजी के बिना श्रीरामकथा अधूरी है।

अध्ययन का महत्वः— गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस अध्यात्मिक, सामाजिक तथा व्यवहारिक जीवन का मार्गदर्शन करती है एवं एक सम्पूर्ण व्यावहारिक जीवन दर्शन को समेटे हुए एक ऐसा ग्रन्थ है जिसने हम संसारी जीवों के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन के विभिन्न अंगों के लिए आदर्श स्थापित किया है एवं जीवन के विभिन्न अंगों को बहुत ही मर्मस्पर्शी एवं स्पष्ट ढंग से छुआ है चाहे वह परिवार के सदस्यों के परस्पर संबंधों की गरिमा—मर्यादा हो, समाज के विभिन्न वर्गों के आपसी संबंधों की मर्यादा हो अथवा राजकीय काम—काज व राजा के कर्तव्यों हो। श्रीरामचरितमानस अध्यात्मिक, सामाजिक तथा व्यवहरिक जीवन का मार्गदर्शन में हमें श्रीभरतजी का चरित्र बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इसलिए इस अनुकरणीय प्रसंग का अध्ययन आवष्यक है।

अध्ययन का औचित्यः— आज तक श्रीरामचरितमानस अध्यात्मिक, सामाजिक तथा व्यवहरिक जीवन का मार्गदर्शन के बारे में बहुत से अध्ययन कार्य हंआ है। परन्तु हमें श्रीभरतजी का प्रसंग पर कोई विषेष अध्ययन की जानकारी नहीं मिलती है। इसलिए इस प्रसंग से प्राप्त ज्ञान का लाभ समाज को मिले है, भक्ति, धैर्य, निष्ठा, एवं पवित्र जीवन के कारण स्वयं श्रीरामजी भरतजी की प्रषंसा करते हुए कहते हैं कि भरत जैसा पुरुष न कोई हैं, और न कोई हो सकता हैं। इसलिए इस अनुकरणीय प्रसंग का अध्ययन समाज को एक सकारात्मक जीवन की ओर मार्गदर्षन के लिए उचित है।

समस्या कथनः—"गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस में वर्णित भरतजी को दिये गये भक्ति उपदेषों का अध्ययन करना।"

अध्ययन का उद्देष्यः—श्रीरामचरितमानस आध्यात्मिक, सामाजिक तथा व्यवहारिक जीवन का मार्गदर्शन में श्रीभरतजी का प्रसंग का षैक्षिक निहितार्थ का आधुनिक संदर्भ में अध्ययन करना।

---

[1] तुलसीदास, गोस्वामी.(सं.2080) श्रीरामचरितमानस, गोरखपुर. गीताप्रेस. पृ. सं. 170

प्रयुक्त षब्दावली की व्याख्याः–

श्रीरामचरितमानस–श्रीरामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा 16 वीं सदी में रचित प्रसिद्ध महाकाव्य है। इसके नायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम है। इस महाकाव्य की भाषा अवधि है। श्रीरामचरितमानस को श्रीरामजी के कर्मों की झील कहा गया है। इस ग्रंथ को अवधी साहित्य की एक महान कृति माना जाता है। इसे सामान्यतः 'तुलसी रामायण' या 'तुलसीकृत रामायण' भी कहा जाता है। श्रीरामचरितमानस भारतीय संस्कृति में एक विषेष स्थान रखता है। श्रीरामचरितमानस की लोकप्रियता अद्वितीय है। गोस्वामी तुलसीदासजी श्रीरामचरितमानस में श्रीरामजी को भगवान विष्णु का अवतार माना है। श्रीरामचरितमानस को गोस्वामीजी सात काण्डों में विभक्त किया। इन सात काण्डों के नाम– बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड है। छंदों की संख्या के अनुसार बालकाण्ड सबसे बड़ा एवं किष्किन्धाकाण्ड सबसे छोटा हैं। श्रीरामचरितमानस हिन्दुओं का पवित्र ग्रंथ हैं।

भक्ति– भक्ति षब्द का अर्थ एवं–भक्ति षब्द की व्युत्पत्ति 'भज' धातु से हुई है, जिसका अर्थ 'सेवा करना' या 'भजना' है, अर्थात् श्रद्धा और प्रेमपूर्वक ईष्ट देवता के प्रति आसक्ति। परिभाषा–"भक्ति भक्त भगवन्त गुरू। चतुर नाम बपु एक।।" "नारदस्तु तदर्पिताखिलाचारता तद्विस्मरणे परमव्याकुलतेति।"– अर्थात अपने सब कर्मो को भगवान को अर्पण करना और भगवान का थोड़ा–सा भी विस्मरण होने पर परम व्याकुल होना ही भक्ति है। भारतीय साहित्य में भक्ति का उदय वैदिक काल से ही दिखाई पड़ता है। भक्तिषब्द की उत्पत्ति सबसे पहले वेदों में हुई थी। व्यासजी द्वारा भागवत गीता में भक्ति षब्द का व्यापक प्रयोग किया गया हैं। भक्ति हिन्दु धर्म की प्रमुख अवधारण में से एक है। भक्ति की परिभाषा देते हुए नारदजी ने कहा है कि ईष्वर में परम–प्रेम भक्ति है। भक्ति के तीन स्वरूप है– सत, तम, रज। इनके अनुसार–सात्विक, राजसिक एवं तामसिक ये तीन प्रकार के भक्ति होते है। इसके अनुसार भक्ति– क्रमषः आर्त भक्ति, जिज्ञासा भक्ति एवं अर्थार्थी भक्ति। भक्ति के स्वरूप विष्लेषण करते हुए नारदजी ने पूर्व आचार्यों द्वारा बताए मत उद्धत किए है। उनके अनुसार ईष्वर में अनुराग, कथा में अनुराग और आत्मरम्यता है। इसमें आत्मरम्यता श्रेष्ठ हैं। यह एक ऐसा तथ्य है जिसके होने पर ही अन्य सभी लक्षण सच्चे अर्थ में भक्ति लक्षण बन जाते है।

उपदेष–उपदेष षब्द का अर्थ है–षिक्षा, सीख, नसीहत, हित की बात का कहना, दिक्षा या गुरूमंत्र। षब्द–साधन के अनुसार उपदेष षब्द के विभिन्न, सम्बन्धित अर्थ है–जैसे–सूचना, स्पष्टीकरण, विनिर्देष, नुस्खा, निर्देष, मार्गदर्षन, आदि। उपदेष षब्द लेटिन के प्रे, जिसका अर्थ है पहले, और डिकेयर, जिसका अर्थ घोषणा है। उपदेष केवल मात्र बात कहना नहीं होता है, अपितु–दृढ़ विष्वास के साथ कुछ घोषित करना होता। अतः विद्वानों द्वारा धर्म तथा नीति सम्बन्धी, सत्कर्म के लिए प्ररित करने वाले वचन उपदेष है।

षैक्षिक–षैक्षिक षब्द का अर्थ है– स्कूल, विद्यालय, विद्वान या षिक्षा से सम्बन्धित जानकारी, तथ्य, ज्ञान, सूचना और उपलब्धियां आदि।

निहितार्थ–निहितार्थ षब्द का अर्थ है, स्पष्ट रूप से बताए बिना कुछ सुझाना या किसी ऐसी चीज को संदर्भित करना जो निहित या सुझाई गई हो। निहितार्थ षब्द के कई अर्थ होते है–निहितार्थ का प्रयोग आरोपित करने के कार्य या आरोपित होने की स्थिति को संदर्भित करने के लिए किया जाता है; अकादमिक लेखन में, किसी अध्ययन के संभावित प्रभाव या प्रभाव को संदर्भित करने के लिए निहितार्थ षब्द का प्रयोग किया जाता है; जब बहुवचन में प्रयोग किया जाता है, तो निहितार्थ ऐसे प्रभाव या परिणाम होते हैं, जो भविष्य में हो सकते है; षोध में निहितार्थ को स्पष्ट रूप से बताना जरूरी है, इससे समीक्षक या पाठक को पता चलता है कि षोध क्यों मायने रखता है। निहितार्थ हमेषा मौखिक होता है, एक गैर–मौखिक प्रतिक्रिया यह दिखा सकती है कि अप्रत्यक्ष संदेष (निहितार्थ) को प्राप्तकर्ता द्वारा सटीक रूप से व्याख्या किया गया था। निहितार्थ वह होता है जो अप्रत्यक्ष रूप से समझाया जाता है या घटित होता है।

अध्ययन विधिः–षोध समस्या को चयन करने के बाद षोध विधि का चयन करना महत्त्वपूर्ण कार्य होता है। षोध विधि उपयूक्त न होने पर षोध के सार्थक परिणाम नहीं आते हैं। अतः दार्षनिक अनुसंधान में अधिकांषतः विवरणात्मक, व्याख्यानात्मक, ऐतिहासिक एवं घटनोत्तर विधियों का ही प्रयोग होता है।

प्रस्तुत षोधकार्य हेतु व्याख्यानात्मक, ऐतिहासिक एवं दार्षनिक विधि का अनुसरण करते हुए विषयवस्तु विष्लेषण के माध्यम से षोधकार्य को सम्पन्न किया जाना है।

परिसीमनः–प्रस्तुत षोध का विषय षिक्षा–दर्षन है, अतः इसमें दर्षन व विषय से संबंधित तथ्यों एवं विचारों, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं को ही षामिल किया गया हैं।

षोध में सम्पूर्ण रामचरितमानस में से केवल मात्र कुछ ही प्रसंग को लिया गया है। जिनमें षबरीजी एवं अहल्याजी, से संबंधित भक्ति उपदेषों का ही षैक्षिक निहितार्थ का अध्ययन किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन–

षोधार्थी के लिए यह आवष्यक है की षोधकार्य प्रारम्भ से पूर्व, अपने षोध विषयवस्तु से सम्बन्धित पूर्व अनुसंधित षोधकार्यो का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर ज्ञान प्राप्त कर लें ताकि षोधकार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकें। जिस प्रकार एक कुषल वैज्ञानिक को विज्ञान के क्षेत्र में हुए समस्त आविष्कारों ज्ञान होना आवष्यक है ठिक उसी प्रकार एक षोधार्थी के लिए षैक्षिक ज्ञान के स्रोत एवं प्रयगों से परिचित होना आवष्यक है। किसी भी अनुसंधान में चाहे वह सामाजिक हो या नैतिक हो, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना को प्रथम चरण माना जाता है इसके अभाव में षोधकार्य कभी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता। षोध कार्य से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन इसलिए भी महत्त्वपूर्ण माना जाता कि उससे षोधकर्ता को यह विदित हो जाता है कि जिस विषय पर वह षोध करने जा रहा है उस पर पहले कितना कार्य हो चुका है और क्या किया जाना षेष है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किए बिना षोधार्थी अगर अपना षोधकार्य करता है तो वह षोधार्थी के लिए अंधेरे में तीर चलाने के समान होता है। जब तक षोधार्थी को यह ज्ञान नहीं होता है कि सम्बन्धित क्षेत्र में कितना कार्य हुआ है, किस विधि से हुआ है, तथा इसके क्या परिणाम प्राप्त हुआ है, तब तक षोधार्थी न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उपयुक्त रूपरेखा ही तैयार कर उस कार्य को सफलता एवं षुद्धतापूर्वक पूर्ण सकते है। पण्डेय, रामनारायण (2008)"मूलरामायण" गीताप्रेष, गोरखपुर। कपूर, अर्चना (2009) ने "पारिवारिक परिवेष का बालक एवं बालिकाओं के मूल्य विकास पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन".डी. ई. आई. दयालवाग.अगरा। अग्रवाल, विकास.(2010)"मर्यादा सीखे राम से"। डॉ.गौरी, महूलिकर.(2004)."रामायण का विभिन्न संस्कृतियों एवं सभ्यताओं पर प्रभाव का अध्ययन". www.google.com.Ramayan Research. कुप्पूस्वामी और ललिता.(2005)."आध्यात्म रामायण और वाल्मीकीय रामायण का तुलनात्मक अध्ययन".विद्यानिधि प्रकाषन.www.mediabookmart.com तिवारी, नीलव (2006) ने ''रामायण का पठन व नैतिक मूल्यों में सुधार'' www.hvk.org. इन षोधों के अध्ययन से ये निष्कर्ष मिला कि श्रीभरतजी के प्रसंग का अध्ययन कार्य नहीं हुआ है। अतः प्रस्तुत विषय–**"गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस में वर्णित भरतजी को दिये गये भक्ति उपदेषों का अध्ययन करना।"** पर अध्ययन करने का निष्चय किया।

भरतजी को दिये गये भक्ति उपदेषों का षैक्षिक निहितार्थः–

"दीनबंधु सुनि बंधु के वचन दीन छलहीन।
देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रबीन।।"314[2]

अर्थात् श्रीरामचन्द्रजी अपने सहोदर श्रीभरतजी के विनम्र एवं छल कपट रहित वचन सुनकर स्नेह पूर्वक देष, काल और अवसर के अनुकूल वचन बोले। यह प्रसंग श्रीरामजी के वनगमन के बाद का है, जब भरतलालजी अपने माताओं, गुरू, अयोध्यावासी, राजा जनक सहित श्रीरामजी से मिलने गये थे उनको वन से वापस लाने के उद्देष्य से। इस प्रसंग से हमें श्रीभरतजी का भ्रातृप्रेम एवं सम्मान का पता चलता है।

"गुरू पितु मातु स्वामि सिख पालें। चलेहुँ कुमग पग परहिं न खाले।।
अस विचारि सब सोच बिहाई। पालहु अवध अवधि भरि जाई।।"314/3[3]

श्रीरामजी अपने भाई भरतलालजी को समझाते हुए कहते हैं गुरू, पिता, माता और स्वामी की आज्ञा का पालन करने से अगर कुमार्ग पर भी कोई चले जाए तो भी उनका पतन नहीं नहीं होता है। ऐसा विचार कर सब सोच छोड़कर अवध जाकर अनन्य भाव से अवधि भर आज्ञा का पालन करो।

"सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानी लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु विधि हाथ।।"171[4]

श्रीरामजी के वनवास एवं दषरथजी के स्वर्गवास के बाद भरतजी को समझाते हुए बिलख कर मुनि श्रीवषिष्ठजी कहते है–होनहार बड़ी बलवान है। हानी–लाभ, जीवन–मरण और यष–अपयष ये सब विधाता के हाथ में है। जो हमारे हाथ में ही नहीं हैं उसके लिए दुःख मत करों।

"भरतहि होई न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीर सिंधु बिनसाइ।।"231[5]

श्रीरामजी के वनवास के दौरान जब भरतजी श्रीरामजी से मिलने वन में आते है, तब लक्ष्मणजी को गलत फहमी हो जाती है कि भरतजी राजमद के वषीभूत होकर श्रीरामजी से युद्ध करने के लिए वन आए है। इस प्रसंग में श्रीरामजी लक्ष्मणजी को समझाते हुए कहते है कि जिन्होंने सत्संग नहीं किया वेही राजा राजमदरूपी मदिरा का पान करते ही मतवाले हो जाते हैं।

---

[2] तुलसीदास, गोस्वामी.(सं.2080) श्रीरामचरितमानस, गोरखपुर. गीताप्रेस. पृ. सं. 555
[3] तुलसीदास, गोस्वामी.(सं.2080) श्रीरामचरितमानस, गोरखपुर. गीताप्रेस. पृ. सं. 556
[4] तुलसीदास, गोस्वामी.(सं.2080) श्रीरामचरितमानस, गोरखपुर. गीताप्रेस. पृ. सं. 441
[5] तुलसीदास, गोस्वामी.(सं.2080) श्रीरामचरितमानस, गोरखपुर. गीताप्रेस. पृ. सं. 489

परन्तु भरत सरीखा उत्तम पुरुष ब्रह्मा की सृष्टि में न तो कहीं सुना गया है, न देखा गया है। ब्रह्मा, विष्णु और महादेव का पद पाकर भी भरतको राज्य का मद नहीं हो सकता। जैसे काँजी की बूंदों से क्षीरसमुद्र नष्ट नहीं हो सकता उसी प्रकार भरतजी को कभी राजमद नहीं हो सकता।

निष्कर्षः– इस अध्ययन से षोधार्थी ने पाया कि भक्ति में, रिष्तें, परिवार आदि सामाजिक बंधनों का कोई महत्व नहीं है। बल्कि अटूट विष्वास, धैर्य, निष्छल प्रेम, समर्पण और सरलता ही महत्वपूर्ण है। यह प्रसंग हमें यह सिखाता है कि सच्ची भक्ति के आगे सब गौण है, श्रीभरतजी को प्रेमपूर्वक गले लगाके प्रभु श्रीराम ने यह सिद्ध किया कि भक्ति और प्रेम के आगे सारे सामाजिक नियम और परम्पराएं अर्थहीन हैं। इससे भक्ति का महत्व का पता चलता है। श्रीरामजी के दर्षन से भरतजी पुनर्जीवित हो उठते है, जो दर्षाता है कि भक्ति और भगवान की षरण ही मुक्ति का मार्ग है। ईष्वर की कृपा प्राप्त करके उद्धार होना प्राणी मात्र का आखिरी आकांक्षा है। श्रीभरतजी के भक्तिपूर्ण निष्छल जीवन के कारण भगवान श्रीराम अपने असीम कृपा प्रदान कर उन पर करुणा की। अतः यह प्रसंग निष्छल प्रेम, भक्ति द्वारा भगवान की कृपा प्राप्त करके अपने जीवन को करने से उद्धार पाने का सौभग्य प्राप्त करने की आषा एवं उम्मीद हम में जगाता है। षिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थी बाहरी प्रलोभनों से बचे एवं पूर्ण श्रद्धा, भक्ति, समर्पण, दृढ़ निष्चय एवं एकाग्रचित्त होकर अध्ययन करेगा तो निष्चय ही उसे सफलता मिलेगी।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. तुलसीदास, गोस्वामी.(सं.2080) श्रीरामचरितमानस, गोरखपुर. गीताप्रेस.
2. पण्डेय, रामनारायण (2008)"मूलरामायण" गीताप्रेष, गोरखपुर।
3. कपूर, अर्चना (2009) ने "पारिवारिक परिवेष का बालक एवं बालिकाओं के मूल्य विकास पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन".डी. ई. आई. दयालवाग.अगरा।
4. अग्रवाल, विकास.(2010)"मर्यादा सीखे राम से"।
5. डॉ.गौरी, महूलिकर.(2004)."रामायण का विभिन्न संस्कृतियों एवं सभ्यताओं पर प्रभाव का अध्ययन". www.google.com.Ramayan Research.
6. कुप्पूस्वामी और ललिता.(2005)."आध्यात्म रामायण और वाल्मीकीय रामायण का तुलनात्मक अध्ययन".विद्यानिधि प्रकाषन. www.mediabookmart.com
7. तिवारी, नीलव (2006) ने ''रामायण का पठन व नैतिक मूल्यों में सुधार'' www.hvk.org.
8. https://www.wikipedia.org
9. https://www.google.com
10. https://www.shriramcharitmanas.in